

# खून चूसने वाली जोंक से शोध में नया कदम

**खून** चूसने वाली जोंक से एक दुर्लभ प्राणी साओला मृग (यूनिकॉर्न) की जानकारी मिली है। इस प्राणी की खोपड़ी सबसे पहले वियतनाम के रिज़र्व फॉरेस्ट में मिली थी। इनकी संख्या सौ से भी कम है और बहुत कम दिखते हैं।



शोधकर्ताओं ने इस प्राणी का डीएनए जोंक के खून से प्राप्त किया है। जोंक प्राणियों के खून का भोजन करती हैं और यह भोजन कुछ महीनों तक उनके अंदर बना रहता है। इसी कारण अन्य पारंपरिक तरीकों के मुकाबले साओला तक पहुंचने का यह बहुत ही प्रभावी और आसान तरीका है कि आप उन जोंकों का अध्ययन करें जिन्होंने साओला का रक्तपान किया था।

युनिवर्सिटी ऑफ कोपनहेगन के आनुवंशिकीविद थामस गिलबर्ड और उनके साथियों ने चिकित्सा में उपयोग होने वाली जोंक को बकरी का खून पीने दिया। इन शोधकर्ताओं ने जब सभी जोंकों का डीएनए परीक्षण किया तो पाया कि बकरी का खून इन सब के डीएनए में मौजूद था।

फ्रांस की जोसेफ फुरियर युनिवर्सिटी के आनुवंशिकीविद पीयरे टेबरलेट का कहना है कि पिछले दस सालों में ज्यादातर शोध डीएनए की मदद से हुए होंगे। डीएनए की मदद से किए गए अध्ययन बहुत आसान और कम खर्चिले

होते हैं।

साओला को एशियन यूनिकॉर्न कहा जाता है। पिछले एक दशक से इसे देखा नहीं गया है। सन 2011 में वियतनाम में साओला रिज़र्व बनाया गया था, लेकिन सफलता नहीं मिली थी।

जोंक के खून के विश्लेषण से अन्य दुर्लभ प्राणियों के डीएनए भी प्राप्त हुए

हैं। गिलबर्ड बताते हैं कि इस प्रक्रिया से एक ही परीक्षण के दौरान कई प्राणियों के डीएनए भी प्राप्त किए जा सकते हैं। उनका कहना है कि ऊष्णकटिबंधीय जंगलों से जोंक बहुत आसानी से प्राप्त की जा सकती है और वहां से गुज़रने वाले शोधकर्ताओं के कपड़ों से इसे दर्ज़नों की संख्या में आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रयोग के द्वारा प्राणियों की संख्या के बारे में तो पता नहीं लगाया जा सकता, लेकिन जिस स्थान से इन जोंकों को पकड़ा जाता है वहां उन प्राणियों की उपस्थिति का अंदाज़ पकड़ी गई जोंक के खून में उपस्थित डीएनए से लगाया जा सकता है। मॉलीक्यूलर इकॉलॉजी के विशेषांक में कई शोधकर्ताओं ने डीएनए से सम्बंधित अपना काम प्रकाशित किया है। उन्होंने डीएनए की मदद से कई दुर्लभ प्रजातियों का पता लगाया जैसे - तेंदुआ, केंचुओं की दुर्लभ प्रजातियां आदि। (स्रोत फीचर्स)